आत्म बोध

संतमत श्री रामचन्द्र सत्संग
फतेहगढ़ (उ.प्र.), 209601

खाली पेज

आत्म बोध

खाली पेज

फोटो

समर्थ सद्गुरु महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज

आविर्भाव : 2 फरवरी 1873 ई० निर्वाण : 14 अगस्त 1931 ई०

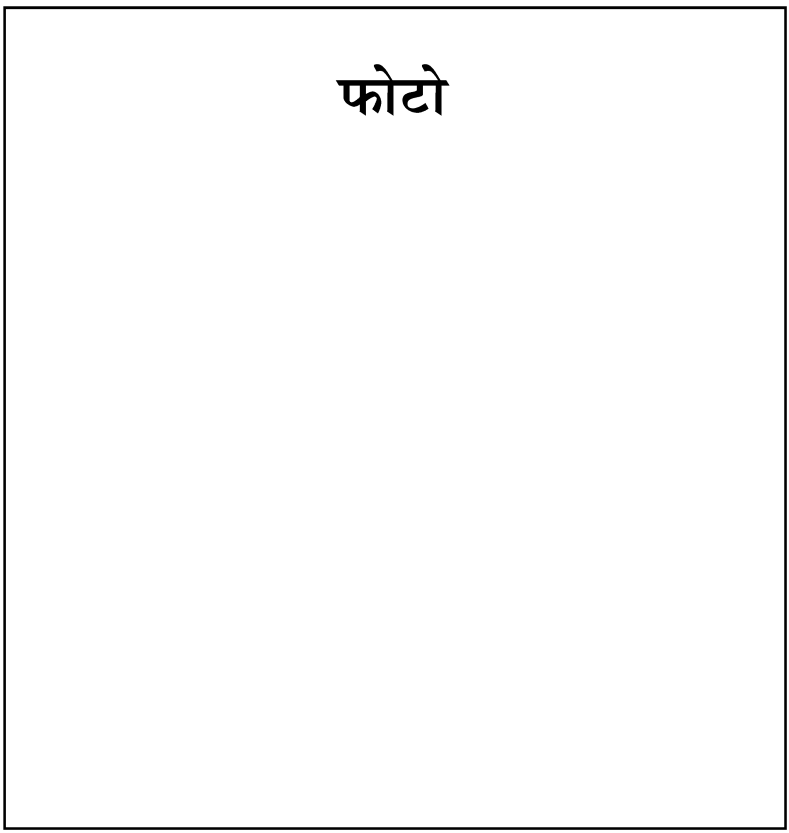

फोटो

समाधि मन्दिर

समर्पण

समर्थ सद्गुरु

महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज

(उर्फ़ लालाजी महाराज)

को

उन्हीं की कृति

उन्हीं के पावन कर-कमलों में

सविनय सादर समर्पित।

विनय कुमार

समीर कुमार

खाली पेज

आत्म बोध

समर्थ सद्गुरु महात्मा श्री रामचन्द्रजी
का अपने भक्तों से संवाद

संतमत श्री रामचन्द्र सत्संग
फतेहगढ़ (उ. प्र.), 209601

प्रकाशक
संतमत श्री रामचन्द्र सत्संग
महात्मा श्री रामचन्द्र मार्ग
1/45, तलैया लेन, फतेहगढ़
जिला : फर्रूखाबाद (उ. प्र.), 209601

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण - 2015

सहयोग राशि : ₹60

प्राप्ति स्थान :
संतमत श्री रामचन्द्र सत्संग
महात्मा श्री रामचन्द्र मार्ग
1/45, तलैया लेन, फतेहगढ़
जिला : फर्रूखाबाद (उ. प्र.), 209601

राम समाधि आश्रम
मनोहरपुरा (जगतपुरा)
जयपुर- 302017

प्राक्कथन

हर कुछ सदियों के बाद सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों के दुष्प्रभाव से आध्यात्मिक पथ के मूल सिद्धान्तों में धीरे-धीरे इतनी अन्य बातें जुड़ जाती हैं कि बहुत बार तो यही पता नहीं रह पाता कि वास्तविक और मूल सिद्धान्त क्या थे? इन्हीं बातों से जहाँ साधकों को बाद में न केवल असलियत पकड़ना मुश्किल हो जाता है वहीं भटकाव और हो जाता है। इसी सबके चलते अवसरवादी धर्म के नाम पर भोले साधकों को मार्ग भ्रष्ट करके उनसे सांसारिक लाभ लेने लगते हैं और असली मार्ग के जानकार जो कि स्वयं इने गिने रह जाते हैं, को सच्चे जीवन अर्पण करने वाले जिज्ञासु मिलने दुष्कर हो जाते हैं। इस सबका इतना भयंकर परिणाम बन जाता है कि जिसे वापस सुधारने में वर्षों तक लग जाते हैं। ऐसे समय के फेर के असर को वापस सुधारने के लिये परमपिता ऊँचे लोकों से समय-समय पर विशेष आत्माएँ भेजते हैं जो अपने ऊपर अनेकों कष्टों को वहन करके जन समुदाय के सामने न केवल अपना जीवन आदर्श बना कर प्रस्तुत करती हैं बल्कि उन्हें सच्चे मार्ग पर लगाकर उनकी हिम्मत को वापस पैदा करती हैं ताकि वे स्वयं सही मार्ग पर अग्रसर होकर पूर्णता प्राप्त कर सकें और अपने साथ वे अन्य अनेकों को मार्ग दिखा सकें और उन्हें आगे बढ़ा सकें।

ऐसी आत्माएँ विरली होती हैं। इसी प्रकार की एक महान् दिव्य आत्मा का परमात्मा की कृपा से हम सबको भी आशीर्वाद मिला है। उस महान् आत्मा का ही नाम महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज है। ऐसी आत्मा अकेली नहीं आती। उनके साथ एक और अन्य आत्मा भी आती है जो उनके कार्य को आगे बढ़ाती रहती है और वह पूज्य आत्मा हैं आपके अनुज महात्मा श्री रघुबरदयालजी महाराज।

महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज का फरमाना था कि खाली पुस्तकों को पढ़ने अथवा बहुत से आध्यात्मिक विषयों पर मात्र विचार करते रहने से ही

काम नहीं चल सकता जब तक कि जीवन साधन समर्पित और अमली न हो। इसके लिये आपका दिया हुआ मूल मंत्र है अनन्य प्रेम से उसको याद करो। कोई भी समय उसकी सुध से खाली न जाय। इसके साथ मनुष्य मात्र की सेवा पर आपने मुख्य रूप से बल दिया। आपका कहना था कि मनुष्य मात्र की सेवा करना ही ईश्वर की पूजा है, इसका बड़ा फल मिलता है। जो सच्चे हृदय से सेवा करता है और सेवा लेने से बचता है, वही परमात्मा का प्यारा बनता है। खिदमते खल्क में तमाम उपासनायें खत्म हो जाती हैं।

सबसे बड़ी विभूति आपमें ये थी कि कोई कैसा भी अशान्त, शोकातुर और परेशान दिल लेकर उनके सम्मुख पहुँच जाय, वहाँ पहुँचते ही सब परेशानियाँ ऐसी लोप हो जाती थीं कि जैसे मानो थीं ही नहीं, और वह आपके पास से शान्त और आनन्दित होकर घर लौटता था। मनुष्य मात्र की सेवा की यह पराकाष्ठा थी कि जब आप देखते कि कोई मुसीबत किसी सत्संगी भाई पर आ रही है और वह सत्संगी बर्दाश्त करने के काबिल नहीं है तो उसे अपने ऊपर लेकर गुज़ार देते थे। सूक्ष्म शरीर द्वारा देश देशान्तरों में भ्रमण करना, अपने प्रेमियों की खबर लेना, संकट आने पर प्रत्यक्ष या अप्रत्क्ष रूप से उनको बचाना तथा अभ्यास में सहायता देना, यह नित्यप्रति उनका साधारण नियम था। आज भी अपने हृदय को उन पर न्यौछावर करने वाले, इन सब विभूतियों को महसूस करते हैं और उनके आशीर्वादों का लाभ लेते हैं। अहं और बनावट आपको स्पर्श तक नहीं कर पायी। वृद्ध और विद्वान को हमेशा ऊँचा बिठाते थे। साधारण सत्संग के समय गद्दी तकिया पर कभी नहीं बैठते थे। यदि उनके लिए कोई चौकी या कालीन बिछा देता तो उसे उठवा देते या उससे नीचे जा बैठते। उस समय कहते कि विशेषता हमको पसन्द नहीं है, सबके लिए एकसा प्रबन्ध होना चाहिये। शिष्यों से भेंट व नज़राना वे कभी नहीं लेते थे और न कभी उनको अपने से छोटा या दास समझते थे बल्कि उनको किसी रिश्ते-नाते में बाँधकर अपनापन महसूस करके साथ चलने को कहते थे। बड़ों से भ्रातृभाव और नौजवान लड़कों से पुत्रवत उनका व्यवहार

रहता था। अपनी शारीरिक सन्तान में और उनमें भेदभाव नहीं रखते थे। आपके अनुगामियों के लिये वे केवल बहुत उच्च कोटि के समर्थ सतगुरु मात्र ही नहीं थे बल्कि उनकी सांसारिक आपदाओं, अप्रत्याशित घटनाओं की स्थिति में अनायास और अपरिमित मदद मिलने के कारण वे सब उन्हें भगवान ही मानते थे। किसी के बच्चे का अपहरण हो गया तो उन तक मात्र खबर पहुँचाना भर था कि बच्चे को उनसे छुड़ाकर वापस पहुँचाने की व्यवस्था वे स्वयं करते थे। किसी के जल भँवर में फँसने पर याद करने पर वे स्वयं कुछ (जैसे कोई लड़का) बनकर बाहर निकाल देते। ऐसे अनेकों उदाहरण दुनिया के हैं जिनको वे कहने भी नहीं देते थे। ऐसी महान् आत्मा के बारे में हम जैसे तुच्छ व्यक्ति क्या बखान कर सकते हैं ?

इस तरह परमात्मा के रास्ते में कितनों को अपने जैसा बना कर ऐसा बना दिया कि वे उनकी हमशक्ल हो गये। ऐसे हमशक्ल शिष्य और सबके लिये आदर्श बन सकें ऐसा वे उन्हें बना गये। आप ने सूफ़ियों से इल्म प्राप्त किया और सबके अनुरूप बनाकर फिर सिखाया वो भी विशेषकर हिन्दुओं को। यह एक महान् दुष्कर कार्य था मगर इतना सफलता पूर्वक किया कि आज हजारों लोग उससे फायदा उठा रहे हैं।

यह ग्रंथ उन्हीं महान् आत्मा का संवाद एवं कुछ विषयों पर उनके विचारों को लेकर है। उनका समझाने का ढंग इतना निराला है कि स्वयं मन मानने एवं अपने ऊपर ढालने को बाध्य करने लगता है। अब उनके शब्दों का आज यह करिश्मा है तो जब वे स्वयं अपनी शक्ति के संचार के साथ सामने बैठाकर समझाते होंगे तो कितना असर होता होगा ? कठोर से कठोर हृदय भी पिघल जाता होगा वह भी सदा के लिये; और उनके समय के शिष्यों से इसकी पुष्टि भी मिलती है। कितने ही विषय पढ़ने में कठिन होने की वजह से हम मात्र पढ़ भर लेते हैं पर बहुत कम समझ में आ पाता है, जैसे स्थितप्रज्ञ अवस्था जिसका वर्णन गीता में अध्याय २ के श्लोक 55-62,65 में भगवान ने किया है। भगवान ने इस अवस्था के दस लक्षण बतलाये हैं इनका विवरण महात्मा

जी के शब्दों में पढ़ते ही बनता है। एक एक लक्षण को कितना गहराई से समझाया है। इसी प्रकार सुख दुख के अनुभव की गहराई जिसका वास्तविक सम्बन्ध मन की आन्तरिक अवस्था से है न कि इन्द्रियों और शरीर से। नाम की महिमा, सत्संग के अर्थ आदि अनेकों हृदय स्पर्शी विषय पढ़ते ही बनते हैं। आशा है कि पाठक इस पुस्तक के माध्यम से इन अनेकों विषयों पर सामग्री का भरपूर लाभ उठायेंगे और पूज्य गुरुदेव के आशीर्वादों से मूल मार्ग पर अग्रसर होंगे।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति आदरणीय श्री यशपाल जौली साहब (जयपुर) को पूज्य श्री रहस बिहारी लालजी ने स्वयं मार्च 2005 में देहावसान के कुछ दिवस पहले हस्तांतरित कर दी थी और यह वचन कहे '' यह रख लीजिये आपके काम आयेगा''। तब से श्री जौली साहब के मन में इसे छपवाकर पुस्तक रूप में सब प्रेमियों तक पहुँचाने की लालसा बनी हुई थी। श्री यशपाल जौली साहब परम् पूज्य ठाकुर साहिब श्री रामसिंहजी, जयपुर के शिष्य हैं। पूज्य ठाकुर साहिब तो उन्हें गुरु भगवान ही कहते थे। उन्हीं परम पावन महात्माजी महाराज की दया व कृपा से वह सामग्री आपके करकमलों में पहुँच पाई है।

श्री रहस बिहारी लालजी, श्री अवध बिहारी लालजी के सुपुत्र थे। श्री अवध बिहारी लालजी पोस्ट मास्टर साहिब श्री श्याम बिहारी लालजी के अनुज थे। पुज्य पोस्ट मास्टर साहिब परम पूज्य श्रीमान् महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज के परम शिष्यों में से थे। आपकी समाधि पूज्य महात्माजी महाराज की समाधि के पास ही सड़क के दूसरी ओर नवदिया में बनी है। श्री अवध बिहारी लालजी साहब भी पूज्य महात्माजी महाराज के शिष्य थे। आप रेल्वे में सेवारत थे और सेवानिवृत्त होने के बाद जयपुर में ही बस गये थे। श्री रहस बिहारी लालजी परम पूज्य श्री रामसिंह राणाजी साहिब (जो परम पूज्य परम पूज्य श्री श्याम बिहारी लालजी साहिब के परम शिष्य थे) से दीक्षा प्राप्त शिष्य थे।

इस पवित्र ग्रन्थ के सम्पादन का पुनीत कार्य परम आदरणीय श्री विनोद बिहारी लालजी साहब ने किया है। श्री विनोद बिहारी लालजी इस साधन पद्धति से किशोर अवस्था की आयु से ही जुड़े हैं। आपका उद्देश्य पूज्य महात्माजी महाराज के कथन, लेखन, विचार, क्रिया पद्धति को भरसक समझना, अपनाना तथा उसे आज के समाज के अनुरुप बनाकर प्रस्तुत करना रहा है। आपने इसी प्रयास में कई पुस्तकें लिखी हैं, जैसे- जीवन लक्ष्य, Aim Divine, Bhagwat Geeta, गीता में सूफ़ी मत, आत्म विद्या सार आदि। प्रकाशक आपका हृदय से आभार ज्ञापित करता है।

विनय कुमार

समीर कुमार

अनुक्रमणिका

क्रम	प्रसंग	पृष्ठ
1.	रघुपति राघव राजा राम	1
2.	भक्तों से संवाद	5
3.	गुरु शिष्य सम्बन्ध	5
4.	योगश्चित्तवृत्ति निरोध	13
5.	स्थितप्रज्ञ अवस्था	22
6.	ईश्वर साक्षात्कार और योग	40
7.	खतरात-रास्ते में	54
8.	संतमत के मुख्य स्तम्भ	59
9.	तेरी इच्छा पूर्ण हो	65
10.	गुरु के प्रकार और पहचान	73
11.	गुरु कृपा	82
12.	अभ्यास की परिपक्वता	88
13.	मजलिस अव्वल (विविध विचार-1)	116
14.	मजलिस दोयम (विविध विचार-2)	129